हिंदी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन
का औचित्य

डॉ० सरोज चन्द्र पाठक

B.A. Part II Hindi Hons.

भक्तिकाल या संवत 1375 से संवत 1700 तक का काल हिंदी साहित्य का स्वर्णकाल था। भावनाओं की श्रेष्ठता, विचारों की उच्चता और अनुभूतियों की तीव्रता की दृष्टि से इस काल की तुलना किसी अन्य काल से संभव नहीं है। इसे ही कलात्मक दृष्टिकोण, कला एवं भाव पक्ष की उच्चता के साथ ही सामाजिक जीवन की श्रेष्ठता के प्रभाव की दृष्टि से भी यह काल हिंदी साहित्य का विशिष्ट काल रहा है। अतः हम कह सकते हैं भक्तिकालीन साहित्य कलात्मक दृष्टि के साथ ही भावनात्मक दृष्टि से भी उच्च कोटि का साहित्य रहा है। किंतु इस साहित्य की कुछ सीमाएं भी हैं - इसने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को इतना अधिक महत्व दे दिया कि इसका सामाजिक भौतिक पक्ष उपेक्षित रह गया। इसकी प्रतिक्रिया तो सामाजिक स्तर पर होनी ही थी [illegible] दर्शन आने वाले साहित्य में रूप भी [illegible] हमें होते हैं।

भक्तिकाल के बीतते-बीतते या कहें अंतिम चरण में ही काव्य को भक्ति भावित व्यवस्था से निकलने का प्रयास आरंभ हो गया था। इधर राजाश्रय में जीने वाले कवियों की रचनाओं में यह स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था कि वर्तमान साहित्य पूर्व के समान नहीं रह गया था। इतने दिनों की भक्ति के विकास के बाद राग सक्रिय हो गया था। धीरे-धीरे साहित्य का स्वरूप बदल रहा था। काव्य में रसिकता, सरसता और चमत्कारपूर्ण प्रदर्शन के प्रति आकर्षण बढ़ रहा था। देखते ही देखते काव्य साहित्य का संपूर्ण चरित्र परिवर्तित हो गया। आध्यात्मिक चेतना का न केवल लोप हुआ वरन कविता पूर्णतः ऐहिक और लौकिक हो गयी। धीरे-धीरे कविता एक ढर्रे पर चलने लगी। काव्यांगों की परिभाषा कविता में ही प्रस्तुत की जाने लगी और उसका उदाहरण भी कविता में ही प्रस्तुत होने लगा। इस विशिष्ट शैली की कविता समाज के प्रबुद्ध वर्ग को खूब भाने लगी। इसी प्रकार अनेक

ग्रंथों की रचना होने लगी जिन्हें रीति ग्रंथ के
से जाना गया। देव, मतिराम, केशवदास, भूषण
साहित्यकारों ने इसनवीन काव्य वैभव को खूब सं
नायिकाओं की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचना से साहित्य
वैभव की रस, अलंकार, छन्द, शब्दशक्ति,
इत्यादि का खूब विश्लेषण हुआ। एक तरह
लगा कि कविजन साहित्य के अंग-उपांगों
विवेचन विश्लेषण कर रहे हैं किंतु इसके अतिरिक्त
रीति मांसल सौंदर्य का वर्णन होने लगा। साहित्य
अश्लीलता का प्रवेश दृष्टव्य हो गया
चूंकि एक लम्बे अन्तराल के बाद कवियों को
में खुलकर खेलने का मौका मिला था अतः
साहित्य के माध्यम से सामाजिक और नैतिक मानद
की सीमा का अतिक्रमण करने में भी संकोच
साहित्यकारों का दूसरा वर्ग
विवेचन में तो नहीं लगा किंतु नारी के
संयोग शृंगार वर्णन में तल्लीनता से लगा रहा। इसको
राजाश्रय से पुरस्कार भी प्राप्त होते रहे। इसके
कि भक्तिकाल के बाद साहित्य का स्वर
बदल गया और लेखन में राजाश्रय या
प्राप्ति पर जोर रहा। यही कारण है कि इस काल
साहित्य जनसामान्य से दूर ही रहा। इस साहित्य
लोक हित की पूर्णतः उपेक्षा हुयी है। तत्कालीन स
क्या चल रहा था इसका कोई संकेत इस साहित्य
प्राप्त नहीं होता। यह जनसामान्य से कटा हुआ था